नमस्कार

आदिकाल : सामान्य परिचय

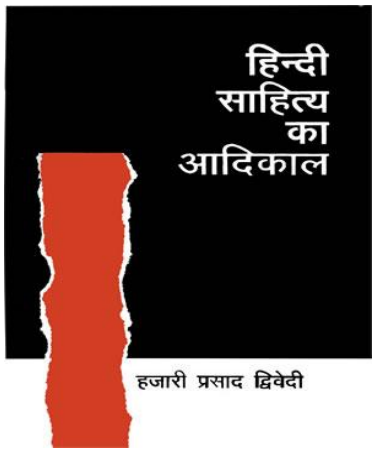

डॉ० कुमारी मनीषा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
पटना वीमेंस कॉलेज

आदिकालः सामान्य परिचय

- **साहित्य ''जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है।''**

  – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- प्रत्येक यग में साहित्य-चेतना में लगातार परिवर्तन और विकास होता रहा है। हलांकि साहित्य के मौलिक प्रतिमान अधिक नहीं बदलते परन्तु बदलते हुए यग-बोध के कारण परिपेक्ष्य, प्रविधि-प्रक्रिया में बदलाव निश्चित रूप से होता है।

- हिन्दी साहित्य के आरंभ का प्रश्न हिन्दी भाषा के आंरभ से जुड़ा है।

  वैदिक संस्कृत → संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → हिन्दी

- इस भाषा का विकास एक जन-भाषा के रूप में हुआ है, जो अपभ्रंश से तुरत-तुरत निकली हुई देशभाषा है। एक ही काल के रचनाकारों में कोई अपभ्रंश में लिख रहा था, तो कोई देश भाषा में, कोई-कोई अपभ्रंश और देशभाषा दोनों में रचना कर रहा था। उदाहरण स्वारूप शारंगधर अपभ्रंश में लिख रहे थे तो अमीर खुसरो देशभाषा में। एक ही कवि विद्यापति एक ओर अवहट्ट का प्रयोग कर रहे थे तो दूसरी ओर 'देसिल बयना' का।

- इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के तीन शब्दों (इति+ह+आस) से हुई है। 'इति' का अर्थ होता है 'जैसा हुआ वैसा ही', 'ह' का अर्थ है सचमुच तथा 'आस' का अर्थ है निरंतर रहना या बोध होना।

- **''किसी राष्ट के काव्य का इतिहास वहां के धर्म, राजनीति और विज्ञान के इतिहास का सार होता है। काव्य के इतिहास में लेखक को राष्ट के उच्चतम लक्ष्य, उसकी क्रमगत दिशा और विकास को देखना अत्यंत आवश्यक है। इससे राष्ट का निर्माण होता है।''**

– कारलाइल

- हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में बाँटा गया है–

1. आदिकाल – 1050 –1375 वि. सं.
2. भक्तिकाल – 1375 –1700 वि. सं.
3. रीतिकाल – 1700 –1900 वि. सं.
4. आधुनिककाल –1900 वि. सं. से अब तक ...

- भक्तिकाल की दो शाखाएँ हैं –

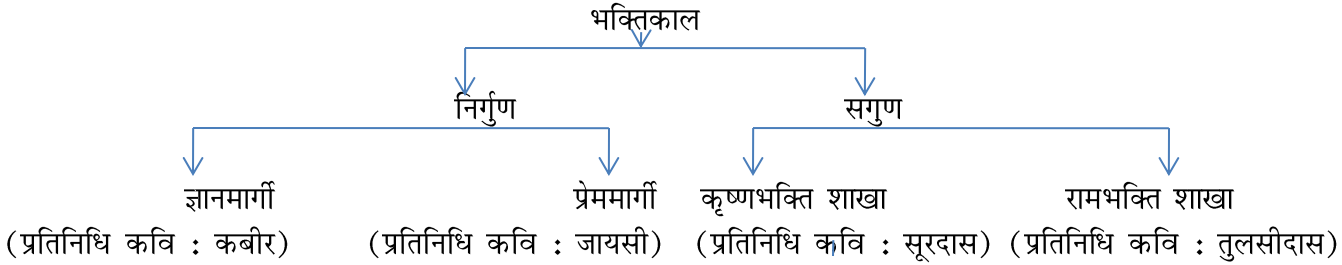

- कबीर – समाजसुधारक, आडम्बर पर कटाक्ष

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहाड
ताते व चक्की भली, पीस खाए संसार

कांकड पाथर जोरि के मस्जिद लियो बनाय
ता पर मुल्ला बांग दे, क्या बहरो हुआ खुदाय।

- जायसी– लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्याख्या।
- सूरदास– पुष्टिमार्गी एवं साख्य की भक्ति
- तुलसीदास– दास्य भाव, लोकमंगल के कवि
- रीतिकाल–

संवत् 1700–1900 वि. तक का कालखण्ड हिन्दी साहित्य में उत्तरमध्यकाल है और नामकरण की दृष्टि से यह काल विवास्पद है। इसे मिश्रबंधुओं ने 'अलंकृत काल', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'रीतिकाल' और पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगार काल' कहा है।

'अलंकृत काल' एवं 'रीतिकाल' जैसे अभिधान जहां तत्कालीन साहित्य की रचना पद्धति की ओर संकेत करते हैं, वहीं श्रृंगार काल जैसे नाम से उस दौर की रचनाओं की एक खास प्रवृति का पता चलता है।

- आधुनिक काल:

वि. सं. 1900 से लेकर अब तक का समय आधुनिक काल कहा जाता है। इस युग में पद्य के साथ-साथ गद्य विधा का भी विकास होता गया।

आदिकाल :

- नामकरण
- काव्य
- शैलियां
- छंद
- भाषा
- साहित्य

➢आदिकाल का नामकरण

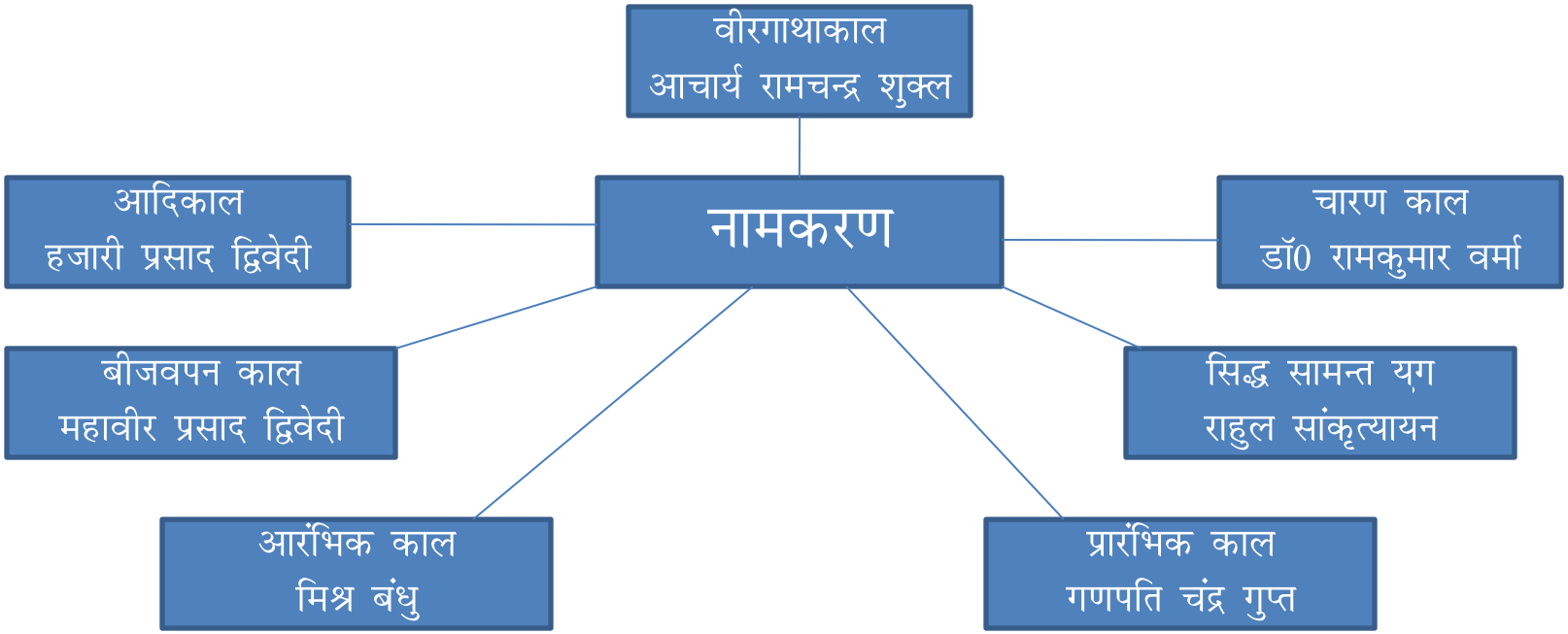
वीरगाथाकाल
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
आदिकाल
हजारी प्रसाद द्विवेदी
नामकरण
चारण काल
डॉ0 रामकुमार वर्मा
बीजवपन काल
महावीर प्रसाद द्विवेदी
सिद्ध सामन्त यग
राहुल सांकृत्यायन
आरंभिक काल
मिश्र बंधु
प्रारंभिक काल
गणपति चंद्र गुप्त

➢ काव्य

❖ प्रबंध काव्य

1. रासो काव्य
2. कीर्ति लता
3. कीर्तिपताका

❖ मुक्तक काव्य

1. सिद्धों एवं नाथों की रचनाएँ
2. खुसरो की पहेलियां
3. विद्यापति की पदावली

➢ शैलियां

डिंगल और पिंगल साहित्यिक राजस्थानी के दो प्रकार हैं–

- **डिंगल**

  अपभ्रंश + राजस्थानी

  डिंगल पश्चिमी राजस्थान का साहित्यिक रूप है। इसका अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा लिखित है। वीर रस की रचनाओं में डिंगल शैली का प्रयोग होता था। इनमें हिन्दी बोलियों के कर्कश शब्दों की भरमार थी।

- **पिंगल** बज्र + राजस्थानी

  पिंगल पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है। इसका अधिकांश साहित्य भाट जाति के कवियों द्वारा लिखित है। पिंगल शैली में कोमल भावों को प्रकट किया जाता था। इसमें कवि कोमल शब्दावलियों का प्रयोग करता था।

➢ छंद

- » दोहा
- » चौपाई
- » तोटक
- » तोमर
- » पद्धरि
- » नराच
- » आल्ह
- » आरिल्ल
- » उल्लाला
- » साटक
- » रोला

➢ भाषा

''दसवीं से चौदहवीं शताब्दी काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं, भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश का ही बढ़ाव है।''

– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

- » अपभ्रंश
- » अवहट्ट
- » देशभाषा

➢ साहित्य

बौद्धों, नाथों सिद्धों जैनों आदि की रचनाएँ हिन्दू,धर्म की रूढ़िग्रस्त धर्मभावना से मनुष्य को मुक्त कर सहज सत्य का साक्षात्कार करा रही थी। ये रचनाएँ लोक चेतना से जुड़ी हैं।

- सिद्ध साहित्य
- नाथ साहित्य
- रासो साहित्य

डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त ने हिन्दी रासो काव्य परंपरा को दो वर्गों में विभक्त किया है-

1. धार्मिक रास काव्य परंपरा
2. एतिहासिक रासों काव्य परंपरा

- विद्यापति पदावली
- खुसरो की पहेलियां
- आदिकाल का गद्य

➢ सिद्ध साहित्य

बौद्ध धर्म की दो शाखाएँ हो गई थीं : हीनयान और महायान

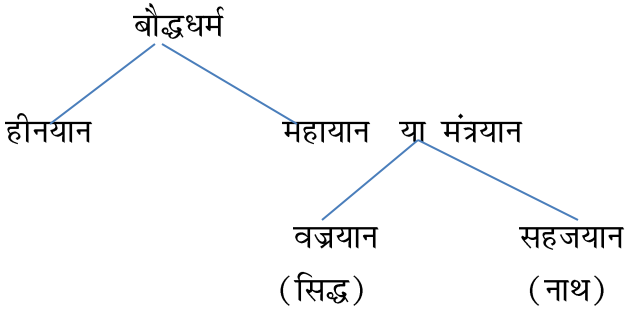

बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार भारत के बाहर भी पर्याप्त रूप में हुआ। तिब्बत और नेपाल में यह धर्म शेव मत से प्रभावित होकर जन सामान्य को आकर्षित करने के लिए तंत्र मंत्र एंव अविचार को अपने में समाहित कर लिया जिसके कारण उसकी अपनी मूल दिशा में ही परिवर्तन हो गया और त्याग, तपस्या एवं संयम का स्थान भोग विलास ने ले लिया। इस प्रकार साधक 'मंत्र-जप' की ओर उन्मुख हो गए और महायान ही मंत्रयान बन गया। इसी मंत्रयान के आगे चलकर दो भाग हुए- वज्रयान और सहजयान।

- वज्रयानी ही सिद्ध कहलाए। य मंत्र जाप और सिद्धि के आकांक्षी थे। सिद्धों ने बौद्ध धर्म के वज्रयान तथ्यों का प्रचार करने के लिए जनभाषा में जिस साहित्य की रचना की वह सिद्ध साहित्य कहलाया। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार सिद्धों की संख्या 84 है। इनका समय 797 ई0 से 1257ई0 तक माना गया है।

- य सिद्ध अपने नाम के पीछे 'पा' जोड़ते थे जैसे- सरहपा, लुईपा, शबरपा, डोम्भिपा आदि। इन्होंने स्त्री सेवन को अपनी साधना का अंग बना लिया था और धर्म तथा अध्यात्म की आड में नारी भोग किया करते थे।

- सिद्ध साहित्य अर्द्धमागधी अपभ्रंश में लिखा गया है। वस्तुतः यह भाषा हिन्दी और अपभ्रंश का मिला जुला रूप है। सिद्धों की रचनाएँ मूलतः उपदेशपरक, नीतिपरक एवं रहस्यपरक है। इनकी कविताओं में शांत एवं श्रृंगार रस की प्रधानता मिलती है।

➢ नाथ साहित्य

'' नाथ-पन्थ या नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध-मत, सिद्ध-मार्ग, योग-मार्ग, योग-सम्प्रदाय, अवधूत-मत एवं अवधूत सम्प्रदाय नाम भी प्रसिद्ध है।''

– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

- ➢ सहजयान से नाथ सम्प्रदाय विकसित हुआ।
- ➢ नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ माने जाते हैं। नाथों की संख्या नौ मानी गयी है।
- ➢ जिस भोग की प्रधानता सिद्ध साहित्य में आ गई थी, उसका विरोध और तिरस्कार नाथ पंथियों ने किया।
- ➢ गोरखनाथ ने पतंजलि के उच्च लक्ष्य, ईश्वर प्राप्ति हेतु हठयोग का प्रवर्तन किया।
- ➢ नाथ पंथियों ने अपने मत का प्रचार प्रसार पश्चिम भारत अर्थात् राजपुताना एवं पंजाब में किया।
- ➢ नाथ पंथियों ने पाखण्ड एवं बाह्याडम्बरों का खुलकर विरोध किया और नीति, सदाचार, संयम, योग आदि पर बल देते हुए इन्हें मुक्ति के लिए आवश्यक माना।
- ➢ नाथपंथ की दार्शनिकता सिद्धांत रूप से शैव मत के अंतर्गत है, और व्यवहारिक पक्ष हठयोग से संबंधित है।
- ➢ गोरखनाथ की रचनओं में गुरू महिमा, इन्द्रिय निग्रह, प्राण साधना, वैराग्य, कुण्डलिनी जागरण एवं शून्य समाधि का वर्णन है। गोरखनाथ ने षट्चक्रों वाला योग मार्ग हिन्दी साहित्य में चलाया।
- ➢ **''इनकी सबसे बड़ी कमजोरी इनका रूखापन एवं गृहस्थ के प्रति अनादर भाव है।''**

– हजारी प्रसाद द्विवेदी

➢ रासो साहित्य

- धार्मिक रास परंपरा के अंतर्गत वे काव्य आते हैं जो जैन कवियों के द्वारा लिखे गये हैं और जिनमें जैन धर्म से संबंधित व्यक्तियों को चरित-नायक बनाया गया है।

- 'भरतेश्वर बाहुबली रास' हिन्दी का प्रथम रास काव्य माना जाता है जिसके रचयिता शालिभद्र सूरि हैं।

- रासो काव्य के कृतिकारों का उद्देश्य धर्म तत्व का निरूपण करना है जिसका मूल स्त्रोत जैन पुराण है।

- इस काव्य में प्रबंध शैली को अपनाया गया है।

- एतिहासिक रासो काव्य परंपरा के अंतर्गत एसे रासो ग्रन्थ आते हैं जो वास्तव में आदिकालीन हिन्दी रासो काव्य परंपरा के अंतर्गत आते हैं।

- वीरगाथा काव्य जो चारण कवियों द्वारा रचित है। इसी वर्ग के अंतर्गत आते हैं।

➢ आदिकाल का गद्य :

आदिकाल के गद्य के अंतर्गत रोडा कृत 'राउलबेल', 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' जिसके रचयिता दामोदर दास हैं तथा ज्यातिरीश्वर ठाकुर रचित 'वर्णरत्नाकर' मैथिल हिन्दी गद्य काव्य आते हैं।

❖ याद रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बातें (प्रमुख बिंदु)

- साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में बाँटा गया है- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल।
- आदिकाल को वीरगाथाकाल, चारणकाल, सिद्धसामंत युग, आरंभिक काल और प्रारंभिक काल के नाम से भी जाना जाता है।
- आदिकाल में प्रबन्ध और मुक्तक दो तरह के काव्य मिलते हैं।
- आदिकाल में डिंगल और पिंगल शैलियां प्रचिलित थी।
- आदिकालीन साहित्य की भाषा अवहट्ट, अपभ्रंश और देशभाषा है।
- सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य (रास काव्य), रासो साहित्य, खुसरो की पहेलियां आदिकालीन साहित्य है।
- सिद्धों की संख्या चौरासी और नाथों की संख्या नौ मानी जाती है।
- राउलवेल, उक्तिव्यक्ति प्रकरण और वर्ण रत्नाकर आदिकालीन गद्य साहित्य है।

सहायक पुस्तकें:- हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ नगेन्द्र

हिन्दी साहित्य का आदिकाल- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

धन्यवाद !